E-ISSN: 2583-9667
Indexed Journal
Peer Reviewed Journal
https://multiresearchjournal.theviews.in

Received: 07-07-2023
Accepted: 13-08-2023

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCE RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY

Volume 1; Issue 2; 2023; Page No. 625-628

भारतीय अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना

[1]Kumar Abhyaditya Shubham and [2]Dr. Balram Singh

[1]Research Scholar, P.K. University, Shivpuri, Madhya Pradesh, India
[2]Professor, Department of Political Science, P.K. University, Shivpuri, Madhya Pradesh, India

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.15546024

Corresponding Author: Kumar Abhyaditya Shubham

सारांश

दुनिया में वैश्वीकरण पुराना है। हालाँकि, यह समय के साथ बदलता रहता है। वैश्वीकरण हमारे दैनिक जीवन को बहुत प्रभावित करता है क्योंकि यह एक देश से दूसरे देश में सूचना के तेज और आसानी से प्रवाहित होने के कारण आज राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण घटना है। वैश्वीकरण को अधिक विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश के माध्यम से देशों और घटनाओं के तेजी से एकीकरण की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। आर्थिक वैश्वीकरण विदेशी वस्तुओं और सेवाओं जैसे पोशाक, मशीनें, फिल्में, गीत आदि के व्यापार को सुगम बनाता है, वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस प्रक्रिया ने देश की औद्योगिक संरचना और सामाजिक संरचना को बदल दिया है।

मूलशब्द: भारतीय, अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज और वैश्वीकरण।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण के प्रभाव दुनिया भर के सभी देशों की अर्थव्यवस्था में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं, इसलिए वे भारतीय अर्थव्यवस्था पर भी दिखाई देंगे। भारत उन देशों में से एक है जहाँ वैश्वीकरण के आगमन के बाद प्रतिस्पर्धा में बहुत वृद्धि हुई है। वैश्वीकरण ने भारतीय कंपनियों को बेहतर और समय पर परिणाम देने के लिए नई व्यावसायिक रणनीतियों को अपनाने के लिए मजबूर किया। वैश्वीकरण ने भारत को 1990 में प्रभावित किया, उस समय श्री मनमोहन सिंह भारत के वित्त मंत्री थे।

हम वैश्वीकरण को दुनिया भर के लोगों, कंपनियों और सरकारों के बीच बातचीत की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। आर्थिक शब्दों में, वैश्वीकरण को अक्सर विभिन्न देशों की अपनी सीमाओं से परे व्यापार को बढ़ावा देने के लिए परस्पर निर्भरता के रूप में वर्णित किया जाता है। वैश्वीकरण एक प्रतिस्थापन अवधारणा नहीं है। प्राचीन समय में भी व्यापारी अपने व्यापार का विस्तार करने के लिए विभिन्न देशों का दौरा करते थे। लेकिन उस समय पूरी प्रक्रिया लंबी और जोखिम भरी होती थी और अब कनेक्टिविटी ने देशों के लिए एक मंच पर वापस आना और अपनी तकनीकों और सेवाओं का आदान-प्रदान करना आसान बना दिया है।

वैश्वीकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जिसके द्वारा विभिन्न अर्थव्यवस्थाएँ और समाज एक दूसरे के साथ अधिक घनिष्ठ रूप से एकीकृत हो जाते हैं। विभिन्न राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक रुझानों की एक विस्तृत श्रृंखला को कवर करते हुए, शब्द "वैश्वीकरण" समकालीन राजनीतिक और शैक्षणिक बहस के सबसे फैशनेबल चर्चाओं में से एक बन गया है। लोकप्रिय चर्चा में, वैश्वीकरण अक्सर निम्नलिखित घटनाओं में से एक या अधिक के लिए एक पर्यायवाची के रूप में कार्य करता है।

वैश्वीकरण को अधिक विदेशी व्यापार और विदेशी निवेश के माध्यम से देशों और घटनाओं के तेजी से एकीकरण की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। यह विश्व दृष्टिकोण, उत्पादों, विचारों और संस्कृति के अन्य पहलुओं के आदान-प्रदान से उत्पन्न अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण की प्रक्रिया है। भारतीय उद्योग में वैश्वीकरण के विभिन्न लाभकारी प्रभाव यह हैं।

भारत में धार्मिक रूप से प्रेरित राजनीति (हिंदू और मुस्लिम दोनों) ने लैंगिक भूमिका, विवाह, तलाक आदि जैसे सूक्ष्म मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है। भारत की लोकप्रिय राजनीति ने समूह की पहचान के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है न कि आर्थिक विकास के सवाल पर। पहचान की राजनीति में वैश्वीकरण के प्रभाव को समझने का एक और तरीका भारत में विकासात्मक राज्य की वापसी के निहितार्थ का विश्लेषण करना है। वैश्वीकृत युग में, भारत में राजनीतिक दिमाग के स्थान के लिए दो तरह के एकात्मक

राष्ट्रवाद ने प्रतिस्पर्धा की। एक ओर, 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' थे, जो हमेशा हिंदू विश्व दृष्टिकोण को भारत की राष्ट्रीय राजनीतिक संस्कृति के मूल में रखना चाहते थे। यह तर्क दिया गया कि भारत की एकता हिंदू धर्म की मजबूत शक्ति से प्राप्त हुई है। उन्होंने समान नागरिक संहिता और भारतीय संघ में जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा समाप्त करने के लिए आक्रामक रूप से दबाव डाला है। भारत में, वैश्वीकरण ने दक्षिणपंथी राष्ट्रवादियों द्वारा प्रचारित हिंदी सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के उद्भव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

साहित्य की समीक्षा

साहू, सरबेश्वर. (2013) [1]. यह शोधपत्र वैश्वीकरण साहित्य में दो बुनियादी सवालों को संबोधित करता है: (1) क्या वैश्वीकरण एक खतरा है या एक अवसर? और (2) बाजार की गहराई वास्तव में दुनिया में वास्तविक ठोस लोकतंत्र को किस हद तक प्रोत्साहित करती है? कई विद्वानों ने तर्क दिया है कि वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप असमानता और गरीबों का हाशिए पर जाना बढ़ गया है, जो लोकतंत्र के लिए अनुकूल नहीं है। हालाँकि, भारत के मामले को ध्यान में रखते हुए, यह शोधपत्र तर्क देता है कि कल्याणकारी राज्य के पीछे हटने और विकासवाद के पतन ने वैश्वीकरण के अभिजात्य और शोषणकारी एजेंडे के खिलाफ जनता को लामबंद किया। परिणामस्वरूप, एक प्रति-आधिपत्यवादी जीवंत नागरिक समाज उभरा है।

कुमार, सुरिंदर एट अल. (2012) [2]. वैश्वीकरण एक नया शब्द है जो पिछली सदी के नब्बे के दशक से शीत युद्ध की समाप्ति और पूर्व सोवियत संघ के विघटन तथा वैश्विक प्रवृत्ति के साथ दुनिया पर हावी हो गया है। अपने पुराने समय में जिस तरह से वर्तमान में विकसित अर्थव्यवस्थाएँ विस्तारित हुईं और वैश्विक हो गईं, उसके विपरीत भारत में (कई अन्य विकासशील देशों की तरह) मुख्य सुधार पहल राजकोषीय और विदेशी मुद्रा संकट के बाद की गई थीं, जिसने इसे विदेशी ऋणों पर चूक के कगार पर ला दिया था। इस प्रकार, भारतीय वैश्वीकरण भीतर के पतन और बाहर से दबाव का परिणाम है। वैश्वीकरण के बाद के वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव विदेशी क्षेत्र-विदेशी मुद्रा भंडार, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेशी पूंजी का प्रवाह आदि में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

गोविंदराज, योगानंदम। (2023) [3]। वैश्वीकरण के कारण अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार माल, सेवाएँ, धन और प्रौद्योगिकी को ले जाना संभव है, जो उद्यमों और समाजों का वैश्वीकरण है। सिल्क रोड इसकी सबसे प्रारंभिक अभिव्यक्तियों में से एक है, और यह प्राचीन व्यापारिक नेटवर्क के दिनों से ही अस्तित्व में है। वैश्विक व्यापार और औद्योगिक क्रांति 15वीं शताब्दी में खोज के युग की शुरुआत में शुरू हुई थी। वैश्वीकरण व्यापार और सहयोग को बढ़ावा देने के साथ-साथ धन, विचारों और विशेषज्ञता के आदान-प्रदान के लिए आवश्यक है। राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज से संबंधित द्वितीयक स्रोतों और सूचनाओं का उपयोग करते हुए, यह अध्ययन पत्र भारतीय अर्थव्यवस्था और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव की जांच करता है।

अब्दुनैइमोवा, दिनारा. (2020) [4]. इस लेख में वैश्वीकरण की घटना की समीक्षा की गई है, इसके सार, विषय-वस्तु और कारणों का विभिन्न पहलुओं में विश्लेषण किया गया है। सांस्कृतिक पहलू पर विशेष ध्यान दिया गया है, विश्व संस्कृति की विविधता के वितरण और संस्कृति के वैश्वीकरण के कारणों और परिणामों पर समाजशास्त्रियों की राय का विश्लेषण किया गया है। वैश्विक भाषाओं का विषय और विभिन्न राष्ट्रों और लोगों की सांस्कृतिक पहचान और विरासत को संरक्षित करने की समस्या का भी खुलासा किया गया है।

मन्हास, नीरज सिंह. (2020) [5]. भारत का चौथा स्थान पूंजीकरण है। वैश्वीकरण के बाद से कृषि में सुधार नहीं हुआ है। सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 17% है। भूमिहीन परिवारों की संख्या बढ़ी, आत्महत्या करने वाले किसान। वैश्वीकरण के सकारात्मक परिणामों के बावजूद, उभरते भारत को इन चुनौतियों का समाधान करने और जल्दी विकास की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। यात्रा से एक त्वरित संदेश यह है कि एक राष्ट्र को जानबूझकर एक नीति संतुलन चुनना चाहिए जो उसे दुर्घटनाओं से बचने के साथ-साथ अवसर को जब्त करने में मदद करे।

अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण विदेशी निवेश को सुगम बनाकर किसी देश की आर्थिक वृद्धि को गति देता है, जिससे अर्थव्यवस्था में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और कौशल का उन्नयन होता है। यह अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी, सूचना प्रौद्योगिकी, डेटा एनालिटिक्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार आदि में विकास और निरंतर वृद्धि जैसे तकनीकी विकास और नवाचार को भी प्रभावित करता है। हालाँकि, अर्थव्यवस्था का समतावादी विकास और असमानता अभी भी एक चुनौती है जो वैश्वीकरण के कारण कहीं अधिक प्रचलित है। विकासशील देशों में वस्तुओं और सेवाओं की अप्रतिबंधित आपूर्ति के कारण गरीबी और बेरोजगारी बढ़ रही है। दूसरी ओर, विकसित वस्तुएं और सेवाएं समाज के एक महत्वपूर्ण वर्ग के लिए वहनीय नहीं हैं।

राजनीति पर वैश्वीकरण का प्रभाव

20वीं और 21वीं सदी में वैश्वीकरण ने राज्यों की भूमिका को नगण्य बना दिया है क्योंकि यह मुक्त अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य से प्रभावित है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देने के लिए स्थापित किए गए विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे संयुक्त राष्ट्र, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF), विश्व बैंक, विश्व व्यापार संगठन (WTO) आदि भू-राजनीतिक रूप से राज्यों की तुलना में अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। IMF, विश्व बैंक और WTO द्वारा बनाए गए नियम अपने सदस्य राज्यों पर अपनी आर्थिक नीति को तर्कसंगत बनाने, वैश्वीकरण को सुविधाजनक बनाने के लिए व्यापार और टैरिफ पर प्रतिबंध को कम करने का नैतिक दायित्व डालते हैं जिससे राज्यों की संप्रभुता पर प्रभाव पड़ता है।

वैश्वीकरण के कारण लोकतांत्रिक मूल्यों और विचारों का प्रसार हुआ है। इससे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा मिला है। विदेशी निवेशकों के लिए भारतीय अर्थव्यवस्था के खुलने से विदेशी व्यापार और निवेश पर निर्भरता बढ़ी है। वैश्वीकरण के कारण लोकतांत्रिक मूल्यों और विचारों का प्रसार हुआ है। इससे भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में पारदर्शिता, जवाबदेही और सुशासन को बढ़ावा मिला है। भारतीय अर्थव्यवस्था को विदेशी निवेशकों के लिए खोलने से विदेशी व्यापार और निवेश पर निर्भरता बढ़ गई है। इससे भारत की विदेश नीति और अन्य देशों के साथ कूटनीतिक संबंधों पर भी असर पड़ा है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ भारत के एकीकरण ने विश्व व्यापार संगठन (WTO) और संयुक्त राष्ट्र (UN) जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में देश की अधिक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। इससे भारत को वैश्विक मामलों में अधिक आवाज़ मिलती है। दूसरी ओर, इससे राष्ट्रीय संप्रभुता का क्षरण भी हुआ है। विश्व व्यापार संगठन (WTO)

और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं को राष्ट्रीय नीतियों को आकार देने में अधिक शक्ति प्राप्त हुई है।
वैश्वीकरण के कारण नागरिक समाज संगठन और सामाजिक आंदोलन भी उभरे हैं। ये संगठन सरकारी नीतियों और कार्यों में अधिक जवाबदेही और पारदर्शिता की वकालत कर रहे हैं। हालाँकि, वैश्वीकरण के लाभों के असमान वितरण के कारण देश के कुछ हिस्सों में सामाजिक अशांति और राजनीतिक अस्थिरता पैदा हुई है।

समाज पर वैश्वीकरण का प्रभाव

वैश्वीकरण एक राष्ट्र की सीमा के पार सूचना के मुक्त और सहज प्रवाह को सुगम बनाता है, जिससे विदेशी संस्कृति का तेजी से आयात होता है। सोशल मीडिया, इंटरनेट और तेज संचार प्रणाली के माध्यम से दुनिया के एक छोर के लोग दूसरे छोर के लोगों के समाज और संस्कृति से आसानी से परिचित हो सकते हैं। आर्थिक वैश्वीकरण विदेशी वस्तुओं और सेवाओं जैसे पोशाक, मशीनें, फिल्में, गीत आदि के व्यापार को सुगम बनाता है, जिसके माध्यम से विदेशी संस्कृति का भी तेजी से आयात किया जा सकता है। हालाँकि, विदेशी वस्तुओं और सेवाओं की आसान पहुँच समाज की लोक और क्षेत्रीय संस्कृति और फैशन के लिए खतरा है।

वैश्वीकरण और पहचान की राजनीति

एक निश्चित, महत्वपूर्ण अर्थ में, वर्तमान मानव दुनिया इतिहास के किसी भी पहले के बिंदु की तुलना में अधिक मजबूती से एकीकृत है। जेट विमान और सैटेलाइट डिश के युग में, वैश्विक पूंजीवाद के युग में, सर्वव्यापी बाजारों और वैश्विक जनसंचार माध्यमों के युग में, विभिन्न टिप्पणीकारों ने दावा किया है कि दुनिया तेजी से एक ही जगह बनती जा रही है। हालाँकि इस थोड़े अतिरंजित वर्णन में एक महत्वपूर्ण बिंदु है, लेकिन शीत युद्ध के बाद की दुनिया का शायद इससे भी अधिक चौंकाने वाला पहलू पहचान की राजनीति का उभरना है - ऐसा लगता है कि हर जगह - जिसका स्पष्ट उद्देश्य जड़ परंपरा, धार्मिक उत्साह और/या जातीय या राष्ट्रीय पहचान के प्रति प्रतिबद्धता की बहाली है। यह निस्संदेह सच है कि वैश्वीकरण एक व्यापक प्रवृत्ति है जो हर जगह लोगों के जीवन को प्रभावित कर रही है - अमेज़न वर्षावन से लेकर जापानी शहरों तक।
यह अवधारणा हाल ही में एक फैशन बन गई है, और परिणामस्वरूप, इसका अर्थ अस्पष्ट होता जा रहा है। इसलिए, मैं वैश्वीकरण को उन सभी सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रियाओं के रूप में देखने का प्रस्ताव दूंगा जो दूरी को अप्रासंगिक बनाने में योगदान करती हैं। इसके महत्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आयाम हैं, साथ ही साथ नैतिक निहितार्थ भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। वास्तव में वैश्विक प्रक्रियाएं विशेष इलाकों में रहने वाले लोगों की स्थितियों को प्रभावित करती हैं।
जिससे नए अवसर और भेद्यता के नए रूप बनते हैं। परमाणु बम और संभावित पारिस्थितिक आपदाओं के युग में जोखिम वैश्विक रूप से साझा किए जाते हैं। इसी तरह, विशेष इलाकों में आर्थिक स्थितियां अक्सर (कुछ लोग हमेशा कहेंगे) वैश्विक प्रणाली में कहीं और होने वाली घटनाओं पर निर्भर करती हैं। यदि ताइवान में औद्योगिक उछाल है, तो अंग्रेजी मिडलैंड्स के शहर प्रभावित होंगे। यदि तेल की कीमतें बढ़ती हैं, तो इसका मतलब है कि तेल निर्यात करने वाली त्रिनिदाद की अर्थव्यवस्था के लिए मुक्ति और तेल आयात करने वाली बारबेडियन अर्थव्यवस्था के लिए आपदा।

वैश्वीकरण और राजनीति

राजनीति विज्ञान में वैश्वीकरण का अर्थ अलग-अलग राष्ट्रों, क्षेत्रों या यहाँ तक कि व्यक्तियों का एक व्यापक वैश्विक व्यवस्था में एकीकरण है। इसकी विशेषता लोगों और देशों के बीच संबंधों और जुड़ावों में वृद्धि और इन अंतःक्रियाओं के बारे में बढ़ती जानकारी है। यह एकीकरण प्रक्रिया अर्थव्यवस्था, राजनीति, समाज या संस्कृति को प्रभावित कर सकती है; यानी, प्रक्रिया की परिभाषा बहुत सामान्य है और यह आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक या सांस्कृतिक एकीकरण को संदर्भित कर सकती है। किसका एकीकरण किया जा रहा है, यह सवाल भी खुला छोड़ दिया गया है, हालाँकि राजनीति विज्ञान में यह ज़्यादातर देश ही होते हैं जो मुद्दे पर होते हैं। इस तरह के एकीकरण का संचालन करने का तरीका भी परिवर्तनशील है। साहित्य में वैश्वीकरण का सबसे आम रूप राष्ट्रीय अर्थव्यवस्थाओं का एक व्यापक वैश्विक अर्थव्यवस्था में आर्थिक एकीकरण शामिल है, आमतौर पर अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, पूंजी प्रवाह, श्रम आंदोलनों और वैश्विक उत्पादन नेटवर्क के माध्यम से।

वैश्वीकरण के कारण

बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि वैश्वीकरण कैसे विकसित हुआ है, और यह जिस तरह से विकसित हुआ है, वह क्यों हुआ है। यदि कोई वैश्वीकरण के धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण को अपनाता है, तो इसकी प्रगति को इस बात से समझाया जा सकता है कि तकनीकी परिवर्तन कितनी तेज़ी से होता है और फैलता है। ऐसे समय में जब ऐसा परिवर्तन बहुत तेज़ होता है और जब नए विचारों और तकनीकों को अपनाना तेज़ होता है, वैश्वीकरण तेज़ी से आगे बढ़ेगा। कई लोगों को लगता है कि 19वीं सदी के मध्य और अंत में ऐसा ही हुआ था, जब भाप की शक्ति, रेलमार्ग और टेलीग्राफ जैसे महत्वपूर्ण नवाचारों ने दुनिया भर में राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन को बदल दिया था। सैन्य प्रतिस्पर्धा और साम्राज्यवादी नियंत्रण द्वारा आंशिक रूप से फैली इन तकनीकों ने दुनिया के दूरदराज के क्षेत्रों को एकीकृत करने में मदद की।
युद्ध के बीच की अवधि में तकनीकी परिवर्तन नहीं रुका, जब वैश्वीकरण पीछे हट रहा था; वास्तव में, युद्ध ऐसे नवाचारों को बढ़ावा देते हैं। लेकिन इस अवधि में ऐसी तकनीकों का प्रसार बहुत सीमित था क्योंकि कई सीमाएँ बंद थीं और देश अपने नए रहस्यों की रक्षा कर रहे थे, जो अक्सर युद्ध लड़ने से जुड़े होते थे। परमाणु हथियारों का विकास इसका एक उदाहरण है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की अवधि को फिर से एक ऐसे दौर के रूप में देखा जाता है जब सरकारों द्वारा तेजी से तकनीकी परिवर्तन को बढ़ावा दिया गया था, जब नई प्रक्रियाओं और उत्पादों का प्रसार बिना किसी बाधा के हुआ था, और जब कम से कम गैर-साम्यवादी देशों में नवाचारों को अपनाने को राज्यों द्वारा अपनाया गया था। इस प्रकार 1950 के बाद वैश्वीकरण में तेजी आई क्योंकि तकनीकी परिवर्तन में तेजी आई।

वैश्वीकरण के परिणाम

वैश्वीकरण के कारणों पर बहस के अलावा, इसके परिणामों के बारे में भी बहुत बहस है। साहित्य में कम से कम तीन अलग-अलग दृष्टिकोण हैं: (1) जबकि कुछ लोग इसके परिणामों को सभी पहलुओं में नकारात्मक मानते हैं, (2) अन्य लोग इसके प्रभावों को समग्र रूप से सकारात्मक मानते हैं, और (3) फिर भी अन्य लोग

दृढ़ता से बीच में खड़े हैं और इसे लागत और लाभ दोनों के रूप में देखते हैं। वैश्वीकरण के कई अलग-अलग प्रभाव होने की बात कही जाती है। यहाँ दृष्टिकोण उन प्रभावों में से कई को देखना और प्रत्येक पर विद्वानों की अलग-अलग राय को रेखांकित करना है। इस स्तर पर, इसके प्रभावों पर बहुत कम आम सहमति है।

इस बारे में पर्याप्त साहित्य मौजूद है कि क्या (और कैसे) वैश्वीकरण ने आर्थिक विकास दर, गरीबी, असमानता, लोकतंत्र, संघर्ष, राज्य क्षमता, नीति और संस्थागत अभिसरण, सांस्कृतिक विविधता, अस्थिरता और संकटों का प्रसार, और पूंजी और श्रम के बीच शक्ति संतुलन को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के प्रभाव का आकलन करने का तात्पर्य है कि किसी को अन्य कारकों को स्थिर रखना चाहिए, जो एक कठिन कार्य है। चूंकि वैश्वीकरण एक सतत प्रक्रिया है, इसलिए इन सवालों के निश्चित उत्तर नहीं दिए जा सकते हैं। हालांकि, सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से प्रत्येक परिणाम के लिए विभिन्न दृष्टिकोण और साक्ष्य मौजूद हैं।

राजनीति और लोकतंत्रीकरण

वैश्वीकरण को राजनीति पर प्रभाव डालने का श्रेय भी दिया जाता है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि इसने लोकतंत्र को फैलाने में मदद की है और नेताओं पर लोकतंत्रीकरण के लिए दबाव डाला है। 1980 के दशक से निश्चित रूप से वैश्विक स्तर पर लोकतंत्र बढ़ा है। लेकिन क्या यह वैश्वीकरण के कारण हुआ है? खुली अर्थव्यवस्था के माध्यम से या अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं या आदर्श उद्यमियों द्वारा उत्पन्न अंतरराष्ट्रीय दबाव के माध्यम से वैश्वीकरण नेताओं को शासन के अधिक लोकतांत्रिक रूपों को अपनाने के लिए प्रेरित कर सकता है यदि वे अंतरराष्ट्रीय प्रणाली के सदस्य बनना चाहते हैं। कुछ लोग इसके विपरीत तर्क देते हैं: कई देशों में नीतियों में बदलाव के लिए लोकतंत्रीकरण आवश्यक था जिसके कारण अधिक वैश्वीकरण हुआ।

घरेलू अर्थव्यवस्था

वैश्वीकरण से कौन से देश लाभान्वित होते हैं और कौन से खोते हैं, इस सवाल के अलावा, यह मुद्दा भी है कि कौन से समूह घरेलू स्तर पर लाभान्वित होते हैं और कौन से समूह खोते हैं। कई लोग वैश्वीकरण को पूंजी मालिकों और दक्षिणपंथी राजनीतिक दलों के हाथ को मजबूत करने के रूप में देखते हैं, न कि श्रम मालिकों और वामपंथी दलों के। एक वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ जहां पूंजी अपेक्षाकृत स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ सकती है, यह घरेलू स्तर पर लाभप्रद हो जाती है। वैश्वीकरण व्यवसाय और श्रम के बीच शक्ति के घरेलू संतुलन को बदलता है। जब पूंजी के मालिकों को सरकार की नीति पसंद नहीं आती है या उन्हें डर होता है कि श्रम बहुत मजबूत हो गया है, तो वे अक्सर एक नए राजनीतिक वातावरण में चले जाते हैं जो अधिक अनुकूल होता है। यह प्रक्रिया तब दौड़-से-नीचे दबाव पैदा कर सकती है क्योंकि सरकारें अपने देश में पूंजी को बनाए रखने की कोशिश करती हैं और अधिक व्यापार-अनुकूल नीतियों को अपनाती हैं। कुछ लोग दावा करते हैं कि वैश्वीकरण ने श्रमिक संघों और श्रम बाजार संगठन के अन्य रूपों को कमजोर करने में मदद की है। यह प्रक्रिया तब राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित कर सकती है।

निष्कर्ष

वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर गहरा और व्यापक प्रभाव पड़ा है। इस प्रक्रिया ने देश की औद्योगिक संरचना और सामाजिक संरचना को बदल दिया है। अर्थव्यवस्था, समाज और संस्कृति सहित कई क्षेत्रों में सूचना प्रौद्योगिकी के तेजी से विकास के कारण परिवर्तन की गति तेज हो गई है। हम वैश्वीकरण को दुनिया भर के लोगों, कंपनियों और सरकारों के बीच बातचीत की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। आर्थिक शब्दों में, वैश्वीकरण को अक्सर विभिन्न देशों की अपनी सीमाओं से परे व्यापार को बढ़ावा देने के लिए परस्पर निर्भरता के रूप में वर्णित किया जाता है। वैश्वीकरण एक राष्ट्र की सीमा के पार सूचना के मुक्त और सहज प्रवाह को सुगम बनाता है, जिससे विदेशी संस्कृति का तेजी से आयात होता है।

संदर्भ

1. साहू, सरबेश्वर। वैश्वीकरण और भारत में गरीबों की राजनीति। जर्नल ऑफ एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज। 2013;49:3–15. doi:10.1177/0021909612471785।
2. कुमार, सुरिंदर; सिंह, कुलविंदर। वैश्वीकरण का प्रभाव: भारतीय अनुभव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, कॉमर्स एंड रिसर्च। 2012;2:1–10।
3. गोविंदराज, योगानंदम। विश्व अर्थव्यवस्था और भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के प्रभाव और आकलन। 2023.
4. अब्दुनैइमोवा, दिनारा। वैश्वीकरण, इसका सार, कारण और परिणाम। एकीकृत शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय जर्नल। 2020;3:28–32. doi:10.31149/ijie.v3i9.583।
5. मन्हास, नीरज सिंह। वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव। 2020. p. 5. doi:10.25215/2455/0502015
6. हिली, डाल्टन। वैश्वीकरण की भूमिका और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं और उनके व्यापक आर्थिक और राजनीतिक माहौल पर इसका प्रभाव। 2012
7. अग्रवाल, अंकुर; कुमारी, मीनाक्षी। वैश्वीकरण और भारत में मीडिया प्रबंधन पर इसका प्रभाव। इल्कोग्रेटिम ऑनलाइन। 2021;20:4150–61. doi:10.17051/ilkonline.2021.01.458.
8. तुरान, सुएप; अवलेह, हनीफ़। मध्य पूर्व में राजनीति और संस्कृति पर वैश्वीकरण का प्रभाव। 2022.
9. माहेश्वरी, हर्ष; सोनी, अर्पण। वैश्वीकरण और सामाजिक संरचना पर इसका प्रभाव। 2023.
10. खान, एस. वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव। 2015;2:11–18।
11. भट्टाचार्य, एच.; कोनिग, लायन। भारत में वैश्वीकरण और शासन: समाज और संस्थाओं के लिए नई चुनौतियाँ। भारत में वैश्वीकरण और शासन: समाज और संस्थाओं के लिए नई चुनौतियाँ। 2015. p. 1–175. doi:10.4324/9781315722917।
12. पटजोशी, प्रमोद। वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव पर एक अध्ययन। 2019.
13. रघुनाथ। वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ रिसर्च - ग्रंथालय। 2017;5(6):544–549. doi:10.29121/ग्रंथालय.v5.i6.2017.2071।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.